गुप्त काल में सांस्कृतिक विकास

हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान

गुप्त काल की सबसे बड़ी विशेषता हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान था। इस काल में ब्राह्मण धर्म की लुप्त प्रतिष्ठा फिर से स्थापित हो गई और इसका पूर्णरूप से विकास हुआ। गुप्त सम्राट हिन्दू धर्म में आस्था रखते थे। इसमें संदेह नहीं कि उनकी धार्मिक नीति बड़ी उदार और सहिष्णु थी और वे सभी धर्मों का समान आदर करते थे परन्तु उन्होंने अश्वमेघ यज्ञ करके और विष्णु व शिव के अनेकों मन्दिर बनवा कर अपने धर्म को बहुत प्रोत्साहित किया। उनकी दृष्टि में सभ्यता और संस्कृति का विशेष महत्व था। उन्होंने स्वदेश, स्वभाषा और स्वधर्म की रक्षा और विकास के लिये हर सम्भव प्रयत्न किया। संस्कृत भाषा और साहित्य की विशेष रूप से उन्नति हुई और बौद्ध धर्म के स्थान पर ब्राह्मण धर्म पुनः लोकप्रिय हो गया। यही कारण है कि गुप्तकाल को पुनर्जागरण का काल कहा जाता है।

गुप्त शासकों ने कई मन्दिरों का निर्माण कराया और धार्मिक संस्थाओं को स्वेच्छा से दान किया। यह मन्दिर हिन्दू देवी–देवताओं से सम्बन्ध रखते हैं, जैसे शिव, विष्णु तथा सूर्य। गुप्त शासकों ने वैदिक धर्म का पोषण वैदिक रीति–रिवाजों को भी अपना कर किया। इन्होंने फिर से अश्वमेघ यज्ञ किया जो पुष्यमित्र के काल से किसी ने नहीं किया था। गुप्त शासकों ने इसके अतिरिक्त **परम भागवत** की उपधि भी धारण कर ली और अभिलेखों में इनकी तुलना वैदिक देवता जैसे **कुबेर** और **इन्द्र** से की गई है। परन्तु यह वैदिक रीति–रिवाज सर्वधारण जनता में अधिक प्रचलित नहीं थे। गुप्तकाल में वैष्णव धर्म अधिक प्रिय हो चुका था। क्योंकि लोगों का विश्वास था, कि विष्णु ने समय–समय पर कई अवतारों के रूप में राक्षसों से लोगों की रक्षा के लिए जन्म लिया है।

वैष्णव धर्म भी बहुत सर्वप्रिय था। जहां गुप्त, पल्लव तथा गंगा शासक वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। शिव की पूजा गुप्तकाल में कई रूपों से होती थी। शिव को कई नामों से पुकारा जाता था जैसे शम्भु, भूपति, शूलपाण, महादेव आदि। शिव पूजा के अतिरिक्त बहुत से लोग देवी के भी उपासक थे। देवी पूजा में लक्ष्मी, दुर्गा, पार्वती का स्थान उच्च था। कुछ लोगों का विश्वास है कि तान्त्रिक विद्या में विश्वास इस देवी पूजा के कारण ही हुआ। देवी की पूजा दोनों ही रूपों में होती थी–**करूणामयी** और **भयंकर**। देवी पूजा के साथ गणेश और कार्तिकेय की भी पूजा का प्रचलन था। पहाड़पुर में गणेश की पत्थर और धातु की कई मूर्तियां मिली हैं। हिन्दू इसको सारे दुःख हरने वाला तथा सफलता देने वाला मानते थे। लोगों का इस काल में तीर्थ यात्रा, सन्ध्या, श्राद्ध, व्रत आदि में भी विश्वास था।

इस प्रकार हिन्दू धर्म के प्रचार, उसकी व्यापकता के कारण ही गुप्तकाल को हिन्दू धर्म के जागरण का युग कहा जाता है। पहले बौद्ध धर्म की उन्नति ने हिन्दू धर्म को एकदम लुप्त सा कर दिया था। सारे भारत में केवल बौद्ध धर्म का ही नाम था। परन्तु गुप्त सम्राटों ने हिन्दू धर्म को अपना कर मृतप्रायः ब्राह्मण धर्म को फिर जीवन दान दिया। भारतीय उपनिवेशों में भी हिन्दू धर्म का प्रसार हो चुका था। उस समय जावा, सुमात्रा, बोर्नियां आदि भारतीय उपनिवेशों में हिन्दू धर्म का प्रचार था और वहां अनेकों हिन्दू मन्दिर बने हुये थे। विद्वानों का विश्वास है कि उस समय के हिन्दू धर्म ने ईसाई धर्म को भी प्रभावित किया था।

गुप्तकाल में हिन्दू दर्शन की भी बहुत उन्नति हुई। कर्मवाद, ज्ञानवाद और भक्तिवाद की खोज इसी युग में हुई। दर्शन, उपनिषद् और गीता पर बहुत से ग्रंथों की रचना की गई। पाताञ्जलि के योग सूत्र पर **व्यास-भाष्य** गुप्तकाल में ही लिखा गया और ब्रह्म–सूत्र तथा गीता पर बड़ी गवेषणायें हुई।

हिन्दू धर्म के साथ संस्कृत का भी इस काल में अत्यधिक विकास हुआ। यथार्थ में गुप्तकाल केवल हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान का काल ही नहीं था, वरन् संस्कृत के पुनरुत्थान का समय भी था।

संस्कृत का विकास

गुप्तकाल में संस्कृत भाषा ने अपूर्व रूप से उन्नति की। प्राचीन धर्म के साथ प्राचीन भाषा का भी पुनरुत्थान हुआ। इसे राज्य भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया और सरकारी मुद्राओं पर भी संस्कृत का प्रयोग होने लगा। अनेकों विद्वानों ने संस्कृत में अपनी रचनायें लिखकर साहित्य में अपना योगदान दिया। संस्कृत न केवल हिन्दू विद्यालयों अपितु बौद्ध विहारों में भी पढ़ाई जाने लगी।

Scanned with CamScanner

संस्कृत साहित्यिक उत्कर्ष के लिए गुप्तकाल इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। हरिसेन, अमरसिंह, भैरवी, विशाखादत्त, आर्य भट्ट आदि उच्चकोटि के विद्वान इसी युग की देन हैं। हरिसेन द्वारा लिखित इलाहाबाद का स्तम्भ लेख ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनों दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण है। विशाखादत्त का **मुद्राराक्षस** और **देवीचन्द्रगुप्तम** उस समय की बहुत श्रेष्ठ रचनायें हैं, जिनसे बहुत–सी ऐतिहासिक बातों का पता चलता है। आर्य भट्ट का सूर्य–सिद्धान्त भी उस समय का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। पंचतंत्र की विश्व–विख्यात कहानियां इसी काल में लिखी गई थीं। पुराण, महाभारत आदि ग्रन्थों को आधुनिक रूप में इसी युग में लिखा गया था। भारतीय शेक्सपियर कवि कालीदास, विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक था। **शकुन्तला, रघुवंश, मेघदूत, कुमार सम्भव** आदि अनेकों महान ग्रन्थों की रचना इसी काल में हुई। वास्तव में गुप्त सम्राटों ने कला और साहित्य की प्रगति के लिए बहुत से प्रसिद्ध कलाकारों को आश्रय दे रखा था। साहित्य और दर्शन इस काल में उन्नति की चरम सीमा पर थे। अतः साहित्यिक दृष्टि से इस काल को स्वर्ण युग कहना सर्वथा उचित है।

शिक्षा का विकास

गुप्तकाल में शिक्षा का बहुत प्रसार था। गुप्त सम्राट स्वयं बहुत विद्वान और सुसंस्कृत थे। इसीलिये वे अपनी प्रजा की शिक्षा की ओर भी पूरा ध्यान देते थे। गुप्त साम्राज्य में कई बड़े–बड़े विश्वविद्यालय थे जहां न केवल भारत के प्रत्येक भाग से अपितु विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालन्दा विश्वविद्यालय, अजन्ता विश्वविद्यालय और सारनाथ विश्वविद्यालय उस समय के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय थे। पाटलीपुत्र तथा वल्लभी उस काल में शिक्षा के बहुत बड़े केन्द्र थे। उज्जैयिनी, पद्मावती, कांची, मथुरा, बनारस आदि स्थानों में भी शिक्षा का बहुत प्रसार था। उस समय के लोकप्रिय विषय पुराण, तर्क, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, वैद्यक आदि थे। शिक्षा प्रायः निःशुल्क होती थी।

विज्ञान का विकास

गुप्तकाल में विज्ञान ने बहुत उन्नति की। गणित, ज्योतिष, वैद्यक, रसायन–शास्त्र, पदार्थ–विज्ञान, धातु–विज्ञान, भूगोल व खगोल विद्या ने इस समय अपूर्व रूप से विकास किया। उस समय के प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्य भट्ट ने पहली बार अपने ग्रंथ सूर्य सिद्धांत में बताया कि किस प्रकार पृथ्वी अपने अक्ष के चारों ओर घूमती है और सूर्य व चन्द्र ग्रहण कैसे होता है। **वराहमिहिर** उस समय का दूसरा महान वैज्ञानिक था, जो ज्योतिष, वनस्पति विज्ञान और भूगोल व खगोल विद्या का प्रकाण्ड पंडित था। अंकगणित में दशमलव भिन्न का अन्वेषण भी गुप्तकाल में ही हुआ था। वैद्यक–शास्त्र ने भी उस समय बहुत उन्नति की थी। दिल्ली के बाहर कुतुबमीनार के निकट लौह स्तम्भ के लेख से पता चलता है कि उस समय के लोग धातु विज्ञान में बहुत प्रवीण थे। आयुर्वेद के महान विद्वान चरक और ब्रह्मगुप्त भी इसी युग की देन थे। उनके अन्तर्गत औषधी शास्त्र ने बहुत उन्नति की थी। उस युग में बड़े–बड़े नगरों में औषधालयों और वैद्यों का बहुत सन्तोषजनक प्रबन्ध होता था।

कला का विकास

कला की दृष्टि से गुप्तकाल बड़े गौरव का युग था। इस काल में भारतीय कलायें अपनी उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच गई थीं। वास्तु कला, मूर्ति निर्माण कला, चित्रकला, धातु–कला, वाद्यकला, संगीत आदि सभी ललित कलाओं का बहुत विकास हुआ। गुप्तकालीन कला विशेष रूप से भारतीय थी। स्वाभाविकता, रूप लावण्यता, भाव–वयंजना और आध्यात्मिकता उस काल की कलाओं की मुख्य विशेषतायें थी।

गुप्तकाल में वास्तुकला का अपूर्व विकास हुआ। ब्राह्मणों तथा बौद्धों ने अनेकों खूबसूरत मन्दिरों और विहारों का निर्माण किया। इस युग के अधिकांश मन्दिर पत्थर के बने हुए थे। गुप्तकाल में बहुत से गुफा मन्दिरों का भी निर्माण हुआ। इस काल की तक्षण–कला का सर्वोतम नमूना अजन्ता में देखा जा सकता है।

गुप्तकाल में मूर्तिपूजा का अधिक प्रचार होने के कारण मूर्ति निर्माण कला ने उस समय विशेष रूप से उन्नति की। उस काल की मूर्तियों की प्रमुख विशेषता नैतिकता और सुन्दरता का सम्मिश्रण थी। उस समय की बहुत–सी विष्णु और शिव की मूर्तियां भी प्राप्त हैं जो अत्यन्त मनोहर और कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। सूर्य देव की मूर्तियों का निर्माण भी इस काल में ही आरम्भ हुआ। सूर्यदेव की मूर्तियां अफगानिस्तान से लेकर मथुरा और मध्य देश तक मिली हैं। इस काल की राम, सीता, लक्ष्मण, कृष्ण, रूक्मणी, सुदामा आदि की बहुत सुन्दर मूर्तियां उपलब्ध हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि उस समय मूर्ति निर्माण कला ने आश्चर्यजनक उन्नति की थी।

गुप्तकाल में चित्रकारी, वाद्य कला और संगीत को भी अत्यधिक प्रोत्साहन मिला था। गुप्त सम्राट संगीत से विशेष प्रेम रखते थे। समुद्रगुप्त की मुद्रायें इस बात का प्रमाण है कि उसे वीणा–वादन का बहुत शौक था। उस समय की अपूर्व चित्रकला हैदराबाद में अजन्ता की गुफाओं में देखने को मिलती है। इन गुफाओं के चित्रों में चित्रकार ने छोटे से मोती या फूल लेकर सम्पूर्ण आकृति की रचना में कला–कौशल प्रदर्शित किया है वह अत्यन्त सराहनीय है।

धातु–कला अथवा मुद्रा–निर्माण कला भी उस समय अग्रणी थी। गुप्तकाल का महरौली का लौह–स्तम्भ उस समय की धातु कला का एक आदर्श प्रतीक है। उस समय की तांबे की मूर्तियां भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

Scanned with CamScanner